ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

सल्तनतकालीन सैन्य संगठन

*डॉ0 रविन्द्र कुमार गौतम**

भारत में तुर्की सत्ता की स्थापना एवं प्रशासन को सुव्यवस्थित रुप से संचालित करने में सबसे महत्व भूमिका सेना की थी । इसी कारण सल्तनत काल के प्रशासन के स्वरुप पर कुछ इतिहासकार इसे सैनिक स्वरुप सिद्ध करने का प्रयास करते है । सल्तनत कालीन राजनैतिक एवं सैनिक आवश्यकताओं ने भी इस सैनिक संगठन को शक्तिशाली बनाने में महती भूमिका निभायीं राजपूत नरेशों की विद्रोहात्मक प्रवृत्ति तथा अपने खोये हुए राज्यों को पाने की महत्वाकांक्षा, तुर्की अमीरों एवं इक्तादारों के आन्तरिक विद्रोह ,तथा उत्तर– पश्चिमी सीमा की ओर से मंगोलों के आक्रमण के कारण सैनिक व्यवस्था को सुदृढ करना तत्काल परिस्थिति में अपरिहार्य था साथ ही दिल्ली के सुल्तानों ने साम्रज्यवादी नीति का अनुसरण जिसका कुशल संचालन एक शक्तिशाली सेना के द्वारा ही सम्भव था। समकालीन इतिहासकारों ने एक कुशल एव सशक्त सेना पर जोर देते है क्योंकि कोई भी राज्य बिना सबल सैनिक संगठन के कार्य नही कर सकता था।[1]

सुल्तान ही वैधानिक रुप से सेनापति होता था क्योंकि वह सैनिक प्रशिक्षण एवं सैन्य कुशलता में दक्ष था। सैनिक अधिकारियों की नियुक्ति, उनका स्थानान्तरण, पदोन्नति आदि सुल्तान की इच्छा पर निर्भर था।जब सुल्तानों ने नागरिक शासन के कर्तव्यों को ग्रहण किया और समाज का कार्य विभाजन प्रारम्भ हुआ ऐसे स्थिति में युद्ध करना एक व्यवसाय के रुप में सामनें आया। सम्भवतः सभी मुसलमान राज्य की सेना के सदस्य होते थे किन्तु सामान्यतया जो पेशेवर सिपाही राज्य की नौकरी करते थे, वे राज्य की सेना में भर्ती होते थे ।

सैनिकों के कार्य क्षेत्रो को देखते हुए इनकी चार श्रेणियों का उल्लेख मिलता है–प्रथम श्रेणी इसके अन्तर्गत नियमित होते थे जो सुल्तान के नियंत्रण में रहते थे। यह स्थाई सेना होती थी। द्वितीय श्रेणी के अन्तर्गत इक्तादारों द्वारा रखे जाने सैनिक थे ये नियमित होते थे, इनकी नियुक्ति सुल्तान की सेना की तरह होती थी । तृतीय श्रेणी में वे सैनिक आते थे जो युद्ध काल या सैन्य अभियान के समय भर्ती किये जाते थे, ये अस्थाई होते थे। चतुर्थ श्रेणी–जन सैनिकों की थी जो सैनिक साज–सज्जा से सुसज्जित होकर सेना में बिना वेतन के भर्ती होते थे जिन्हे लूट में हिस्सा प्राप्त होता था। इसे खम्स /खुम्स के नाम से जाना जाता था।

प्रथम श्रेणी के सैनिक जो सुल्तान के नियंत्रण में रहते थे, उसमें सर्वप्रमुख 'जानदार' था जिसे सुल्तान के अंगरक्षक के रुप में जाना जाता था ।यह जानदार सैनिक प्रमुख के रुप में सुल्तान ,दरवार और राजमहल के चारों ओर शांति सुव्यवस्था ही स्थापित नहीं रखते थे बल्कि युद्धों में भी सम्मिलित होते थे। साधारणतया जानदार सुल्तान के व्यक्तिगत दासों में से नियुक्त होते थे परन्तु उनका प्रमुख 'सरेजानदार' स्वतंत्र कुलोउत्पन्न अमीर होता था।[2] सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था का सुभारम्भ सल्तान इल्तुतमिश के शासन काल से माना जाता है। उसके काल में सल्तनत की सेना को 'हश्म–ए कल्ब' केन्द्रीय सेना या कल्ब–ए–सुल्तानी कहा जाता था।[3] इसमें से एक नये वर्ग का नाम 'बन्दगान–ए–खास' या 'खादम–ए–खास' कहा जाता था। इल्तुतमिश के सेना के गठन का आधार गुलामों पर अवलम्बित था। इन सैनिकों को सुल्तान इल्तुतमिश ने विशेष महत्व प्रदान किया किया क्योंकि इन दास सैनिकों के वदौलत तुर्की अमीरों की बढती हुई शक्ति को रोकना चाहता था । ये दास सैनिक सुल्तान के विश्वास पात्र बने रहे क्योंकि उनके लिए अन्य कोई विकल्प नहीं था। जानदारों के साथ सेना की व्यवस्था सीधे आरिज–ए–ममालिक करता था। इस सैन्य विभाग को दीवान –ए–अर्ज कहा जाता था इसके प्रमुख को आरिज–ए–ममालिक कहा जाता था। आरिज–ए– ममालिक का कार्य सैन्य व्यवस्था को देखना अर्थात सेना की भर्ती, वेतन भुगतान ,वेतन की दर सुनिश्चित करना, सैनिकों के लिए हथियार की व्यवस्था, उनकी प्रोन्नति, अवनति इत्यादि प्रमुख था।[4] उक्त कार्य के सहयोग के लिए सहायक कमाण्डर' होता था जिसे नायब के नाम से जाना जाता था। नायब का प्रमुख कार्य सेना को कमाण्ड करना तथा सेना हेतु आवश्यक समाग्रियों को उपलद्ध कराना होता था।

द्वितीय श्रेणी में इक्तादारों द्वारा रखे जाने वाले सैनिक होते थे। इक्तादार इक्ता का प्रमुख होता था, इसे मुक्ता भी कहा जाता था। प्रत्येक इक्तादार अपनी नीजि सेना होती थी। हालांकि इक्तादार का राजस्व आवंटन उसके भौतिक साधनों से,उसकी सामाजिक स्थिति और उसका राजनितिक प्रभाव निश्चित होते थे। सार्वजनिक राजस्व से सम्प्रेषित प्रादेशिक सैन्य दल तकनीकि तौर पर स्थाई सेना /केन्द्रीय सेना के अंग होते थे।[5] व्यवहार में प्रादेशिक सेना इक्तादार की नीजि सेना होती

***असिस्टेन्ट प्रोफेसर–इतिहास विभाग श्यामेश्वर महाविद्यालय सिकरीगंज ,गोरखपुर**

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

थी। इस सेना की नियुक्ति, वेतन, प्रोन्नति, पदोन्नति, आदि मुक्ता के अधीन होता था। इन सैनिकों की भर्ती भी केन्द्रीय सेना की तरह स्थाई होती थी। इस सेना का प्रमुख इक्तादार का आरिज होता था। राजधानी में तैनात किये हुए नायबे आरिज सैन्य दल का प्रमुख होता था। केन्द्र और प्रान्त दोनोंमे स्थाई रुप से नियुक्त सैनिक 'वझी' (wajhi) नियमित सैनिक कहलाते थे। वझी शब्द नियमित सैनिक के रूप में तुगलक काल में प्रयुक्त हुआ था।[6] तृतीय श्रेणी में वे सैनिक आते थे जो युद्ध काल या सैन्य अभियान के समय भर्ती किये जाते थे। इस तरह की भ्र्ती प्रकिया पुरानी थी। 1241 ई0 में जब मंगोलों ने लाहौर पर आक्रमण किया उस समय सद्र–उस–सदुर 'मिनहाज उस सिराज' को सुल्तान ने निर्देश दिया था कि काफिरों के विरूद्ध युद्ध करने के लिए लोगो को अनुरोध पूर्वक उपदेश दें।[7] लखनौती अभियान पर जाते समय सुल्तान गयासुद्दीन बलबन ने अवध में सामूहिक भर्ती की जिसमें लगभग दो लाख 200000 धनुर्धर, अश्वारोही एवं पैदल सैनिक सम्मिलित थे। यह कहना कि उक्त सभी सैनिक केवल मुस्लिम थे, इसके पर्याप्त साक्ष्य नही है।उल्लेखनीय है कि विशेष युद्धों के लिए हिन्दू सिपाहियों को भी भर्ती किया जाता था। रजिया ने सिंहासन के पुर्नप्राप्ति के लिए पति अल्तूनिया के साथ जो सेना संगठित की उसमें से अधिकांश मुख्यतः पंजाब के खोक्खर एव जाट जनजाति के ही थे।[8] चतुर्थ श्रेणी नागरिक जनसेवकों की थी जो युद्ध के दौरान सैनिक साज–सज्जा से सुशज्जित होकर विना वेतन के भर्ती होते थे जिन्हे लूट का हिस्सा अर्थात खुम्स/खम्स प्राप्त होता था। इल्तुतमिश के शासन काल के प्रारभिक भाग में फखे मुदब्बिर ने एक सैनिक निरीक्षण का वर्णन किया है और पैदल दल के एक सैनिको के निरीक्षण दल का वर्णन किया है "जो स्वेच्छा से सैनिक दल में सम्मिलित हुए है उन्हे एक –एक करके आरिज के सामने प्रस्तुत होना चाहिए।[9] इसी प्रकार जियाउद्दीन बरनी भी सैनिकों के एक ऐसे वर्ग का उल्लेख करता है जो स्वयं अपने हथियार और घोडे. की आपूर्ति करते थे तथा स्थाई सेना में सामिल होते थे।[10]

सैनिकों में चतुर्थ श्रेणी सैनिक अर्थात स्वयं सेना के अतिरिक्त सभी प्रकार के सैनिकों को या तो नकद वेतन दिया जाता था उन्हे (Mawjib) कहते थे या तो जिन्हे अधिन्यास (Assignment) उन्हें इक्ता कहते थे। सैनिक दृष्टि से अलाउद्दीन का शासन काल सबसे महत्वपूर्ण युग था। अलाउद्दीन खिलजी कहता है कि " मै एक मरतब को 234 टंका और दो अस्पा को 78 टंका देता हूँ।[11] मरतब उस सैनिक को जिसे यथोचित निरीक्षण के उपरान्त सेना भर्ती किया जाता था। नियमित रूप से नियुक्त सैनिक का वेतन 234 टंका वार्षिक या 19.5 टंका मासिक था। एक अतिरिक्त घोडे. के व्यय के लिए 78 टंका वार्षिक या 6.5 मासिक निर्धारित था।[12] सैनिक अधिकारियों का वेतन अक्ता के रूप मे तथा सैनिकों को धनराशि के रूप में दिया जाता था। जो सैनिक सेनाध्यक्ष के अधीन रहते थे उन्हें सीधे शाही खजाने से वेतन दिया जाता था। मंगोल नेता हलाकू 1291 ई0 में जलालुद्दीन खिलजी के समय जब दिल्ली आया था तो उसमें से कुछ दिल्ली में बस गये थे, इन्ही में से कुछ 'अमीरान–ए–सादा', 'अमीरान–ए–हजारा' एवं 'अमीरान–ए–हजारा' भी थे।बाद में यह मंगोल दिल्ली सल्तनत की सेना के अभिन्न अंग बन गये। अब सल्तनत की सेना में प्रचलित सैनिक वर्गीकरण पद 'अमीरान ए सादा' एवं 'अमीरान ए तुमन' के उदाहरण मिलते है। मंगोल सेना का वर्गीकरण दशमलव प्रणाली (Decimal System) पर आधारित था जिसे सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था में अपनाया गया। अमीरान ए सादा 100 सैनिक, अमीरान ए हजारा 1000 सैनिक तथा अमीरान ए तुमन 10000 के अनुपात में संगठित थे।[13] सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था योग्यता एवं पद के आधार पर सोपानवत निम्न प्रकार थी–सबसे उपरी पायदान पर खान इसके बाद मलिक, अमीर, सिपाहसलार, सरखेल होते थे।[14] उल्लेखनीय है कि 10000 घुड़सवार के नेतृत्वकर्ता को खान कहा जाता था जबकि 1000 मलिक,100 अमीर एव 100 से कम सिपाहसलार एवं सरखेल की श्रेणी में रखा जाता था।[15] सैनिकों का वेतन उनके पद स्थिति के अनुसार प्रदान किया जाता था। प्रत्येक खान को 100000 टंका प्रति वर्ष प्राप्त होता था, उसी प्रकार मलिक को 60000–50000 टंका, अमीर को 40000–30000 टंका सिपाहसलार को 20000 टंका के आस–पास जबकि अन्य सैन्य अधिकारियों को 10000–1000 टंका प्रदान किया जाता था।[16] वेतन के अतिरिक्त इन सभी सैन्य अधिकारियों भोजन, वस्त्र, तथा घोड़े को चारा–दाना मुफ्त मिलता था। सैनिक अधिकारियों का वेतन अक्ता के रूप में तथा अन्य सैनिकों का नकद प्रदान किया जाता था। इन सैन्य अधिकारियों उच्च वेतन के अतिरिक्त अन्य सम्मान उन्हें विशेष दर्जा प्रदान करता था जैसे– ध्वजों के सार्वजनिक प्रयोग के सम्बन्ध में खान को नौ ध्वज ले जाने का अधिकार था किन्तु अमीर को तीन से अधिक ध्वज ले जाने अधिकार नहीं था। इसी प्रकार खान को जुलूस में दस घोड़े हाथ से ले जाने की अनुमति थी जबकि अमीर केवल दो घोड़े ले जा सकता था।[17] सेना की महत्ता एवं आवश्यतानुसार सल्तनत काल में सैन्य विभाग एवं आरिज विभाग बहुत ही महत्वपूर्ण था। भारत में आरिज विभाग की स्थापना सबसे पहले बलबन ने की थी। इस विभाग का प्रमुख 'आरिज–ए–ममालिकात' कहलाता था। सल्तनत काल में सैन्य विभाग का स्थाई कार्य अलाउद्दीन खलजी द्वारा किया गया। उसने सर्वप्रथम सेना को अधिक केन्द्रीकरण किया, सेना की सीधी भर्ती और केद्रीय कोषागार से सैनिकों को नकद वेतन देना प्रारम्भ किया।[18] साथ ही साथ सैनिको की हुलिया रखना एवं घोड़े दागने की प्रथा सुनिश्चित की।

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

सल्तनत काल में तत्कालीन आवश्यकता एवं अनुभव के आधार पर प्रमुख रूप से घुड़सवार, हाथी, पैदल, एवं आग्नेयशास्त जैसे सैनिकों को समाहित किया गया था। इन सैनिकों के बदौलत सुल्तान आन्तरिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित रखने के साथ –साथ वाह्य आक्रमण को रोकने तथा साम्राज्य विस्तार में प्रायः सफलता प्राप्त किये। भारत में तुर्कों की विजय में अश्वारोही /घुड़सवार सैनिकों का सर्वाधिक योगदान रहा है साथ ही इस सैनिक बल के बदौतल सुल्तानों ने मंगोलो के आक्रमणों का सफलता पूर्वक सामना कर सके। बारबोसा ने सल्तनतकालीन अश्वारोही सेना की योग्यता, सामरिक गुणों तथा घोड़ों की भूरि–भूरि प्रसंशा की है। अलाउद्दीन खलजी के शासन काल में एक अस्पा, दो अस्पा सैनिकों में अन्तर स्पष्ट हो गया था। बरनी ने भी घुड़सवार सैनिकों के संदर्भ में मुरतब /मुर्तब एक अस्पा, दो अस्पा का प्रयोग किया हैं।[19] घुड़सवार सेना को शसक्त बनाने के लिए उत्तम किस्म के घोड़े प्रायः अरब, तुर्किस्तान एवं रूस से आयात किया जाता था। अलाउद्दीन खिलजी के पास लगभग 70,000 घोड़े राजधानी में रहते थे।[20] क्योंकि मंगोलो के आक्रमण का खतरा बना रहता था। घोड़े केवल सेना के महत्वपूण अंग नहीं बल्कि मान– सम्मान के साथ खेल के साधन भी थे। समकालीन खेलों में चौगान एक महत्वपूर्ण खेल था जो घोड़े के पीठ पर बैठ कर खेला जाता था। कुतुबुद्दीन ऐबक मृत्यू चौगान खेलते समय घोड़े से गिर जाने के कारण हुई थी। घुड़सवार सेना के प्रमुख को 'अमीर–ए–आखुर' कहा जाता था।

सल्तनतकालीन सेना का दूसरा महत्वपूर्ण हिस्सा 'गज–सेना' मानी जाती थी। दिल्ली के सुल्तान हाथियों को कांफी महत्व प्रदान किये। सुल्तान बलबन प्रायः अपने करिबियों से कहा करता था कि हिन्दुस्तान की शोभा हाथियों पर निर्भर है। हिन्दुस्तान में प्रत्येक हाथी 500 सवारों के बराबर होती है। मेरी राजधानी असंख्य हाथियों, घोड़ों से भरी रहती है।[21] गज सेना के सम्बन्ध में बारबोसा स्पष्ट चित्रण करता है कि–हाथी के पीठ पर एक लकड़ी का हौदा बना होता था जिसमें तीन से चार सैनिक अस्त्र–शस्त्र से सुशज्जित होकर युद्ध करते थे।[22] हाथियों को युद्ध के लिए प्रशिक्षित किया जाता था। मुहम्मद बिन तुगलक की सेना में लगभग 3000 हजार हाथी युद्ध के लिए उपयोगी थे। फिरोज तुगलग ने द्वितीय बंगाल अभियान के समय 470 हाथियों का उपयोग किया था।[23] युद्ध के मैदान में हाथियों का प्रहार जहां भयंकर तांडव मचाता था, वहीं हाथी पर बैठे सैनिक शत्रुओं पर अधिक हावी हो सकते थे। हाथी मुख्य रूप से बंगाल से प्राप्त किये जाते थे। इस विभाग के प्रमुख अधिकारी को 'शहना–ए–पील' कहा जाता था। सामान्यतः सेना के दाये एवं बायें भाग के लिए अलग–अलग शहना होते थे।[24]

सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था के तृतीय श्रेणी में पैदल सेना एक महत्वपूर्ण सेना मानी जाती थी। इसे पायक भी कहते थे, पायक सेना में अधिकांशतः हिन्दू, गुलाम अथवा निम्न कुल के व्यक्ति होते थे, जो नौकरी चाहते थे किन्तु घोड़ा रखना उनके बस की बात नही थी।[25] सामान्यतः ये व्यक्तिगत रक्षक या दरवान होते थे। अपनी निम्न स्थिति होने के कारण भी महत्वपूण भूमिका निभा लेते थे जैसे अकत खां के विद्रोह के समय पायक अंग रक्षकों ने अलाउद्दीन खलजी की रक्षा की थी। इसी तरह कुतुबुद्दीन मुबारक शाह को (अलाउद्दीन खलजी की मृत्यू के 35 दिन उपरान्त) गद्दी पर बैठाने का श्रेय पायकों को ही जाता है।[26] पायकों के अलावा धर्नुधारी भी होते थे जिन्हे धानुक कहा जाता था। बारबोसा दक्षिण के सम्बन्ध में पैदल सैनिकों के विषय में विवरण देते हुए लिखता है कि ''ये तलवार बरछी, धनुष एवं बाण लेकर चलते थे, ये कुशल धनुर्धारी होते थे तथा इनका धनुष काफी लम्बा होता था। सुयोग्य पायक अधिकांशतः बंगाल से भर्ती किये जाते थे।''सन् 1259 ई0 में जब हलाकू के राजदूतों का दिल्ली में स्वागत किया गया था तब प्रादेशिक सैन्य दलों को मिला कर राजकीय सेना में 200000 पायक सैनिक थे।[27]

सल्तनतकालीन सैन्य व्यवस्था में आग्नेयशास्त्र एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। समय–समय पर शत्रु सेना के खिलाफ आग्नेय शस्त्र के प्रयोग के उदाहरण मिलते है। तैमूर के आक्रमण के विरुद्ध आग्नेय शास्त्र का प्रयोग किया गया था।[28]

किला (Forts) को सैनिक संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता था। किले प्रायः उस क्षेत्र में बनाया जाता जहॉ प्रकृति से स्थिर लाभ हो सकते थे। किले के चारो तरफ खाईयॉ खोदी जाती थी तथा काटों की झाड़िया जगाई जाती थी ताकि शत्रु घुड़सवार शीघ्र उसके पास न पहुच सके। बलबन पहला शासक था जिसने मंगोलों के आक्रमण ध्यान में रखकर किले बनाने के आदेश देता है। बलबन जब मंगोलो के आक्रमण से सुरक्षा के लिए लाहौर गया था तब वहॉ के किले को सुदृढ बनाने का आदेश दिया। उसने सीमा पर किले की कतार बनाई उदाहरणार्थ– काम्पिल, पटियाली, भोजपुर तीन सबसे मजबूत किले थे।[29] 1303 ई0 में तरगी के आक्रमण के पश्चात अलाउद्दीन खलजी ने किले बंदी की ओर ध्यान आकृष्ट किया। उसने पुराने किले की मरम्मत तथा सामरिक महत्व के स्थानों पर नये किले बनाने का आदेश दिया।[30] किले को सुरक्षा पक्ति का मुख्य भग माना जाता था और उसकी सुरक्षा के सभी आवश्यक प्रबन्ध किये जाते थे। प्रत्येक किले में उसका सेनापति होता था, उसे कोतवाल कहते थे, जिसके पास किले की चाभी होती थी।[31] इस प्रकार कोतवाल ही किले का सर्वोच्च अधिकारी होता था। कोतवाल के अतिरिक्त किले में 'मुफरिद' होते थे जो शायद अभियंता थे, जिनका कार्य किले के हथियारो का देखभाल करना था। इस काल में बहुत से हथियार प्रयोग लाये जाते थे। युद्ध में सैनिक और उसका घोड़ा अच्छी सुरक्षित

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

रहते थे। घोड़ा स्पात और सैनिक कवच और शिरत्राण से ढके रहते थे। सैनिक के पास दो तलवारें रहती थी साथ ही उसके पास धनुष, वाण, गदा और कल्हाड़िया होती थी। हाथी धातु के पत्तरों से आच्छादित रहते थे। पैदल सैनिक तलवार और कटार के अतिक्ति लम्बे धनुष और बाणों सुशज्जित रहते थे। घेरे के यन्त्रों में मंजनीक, अर्राद और मगरबी रहते थे। ये पत्थर आग फेकने के यंत्रों का कार्य करते थे।[32] 'गरगज' एक ऐसा चक्केदार ढका हुआ मंच होता था जिससे सुरक्षित रूप से किले के आधार तक पहुचा जा सकता था। विजय के उपरान्त या विदेशी आक्रमण को पीछे ढकेलने के उपरान्त अलाउद्दीन अपनी सेना को भंग नही कर देता था। समय –समय पर सेना का कठोर निरीक्षण किया जाता था साथ धोड़े एवं सैनिक शस्त्रों का भी निरीक्षण किया जाता था। अमीर–खशरों के अनुसार जो सेना वारंगल गयी थी उसकी नामावली एवं निरीक्षण में चौदह दिन लगे थे।[33] सुल्तान अलाउद्दीन की विशाल सेना विशाल सेना में 475000 सुसज्जित और वर्दीधारी घुड़सवार थे।[34] मुहम्मद बिन तुगतक के शासन काल में आरिज–ए–ममालिक ने 370,000 पैदल सैनिकों को नामांकित किया था।[35] मसालिक उल अबसार के लेखक के अनुसार मुहम्मद बिन तुगलक शासन काल में कुल घुड़सवारों की संख्या 90,000 थी जिसमें इक्तादारों के घुड़सवार सैनिक भी सम्मिलित थे।[36] सुल्तान फिरोजशाह तुगलक शासन काल में सेना के संख्या में गिरावटा आयी हालांकि उसने दाग प्रथा, हुलिया, सैनिक जॉच की प्रथा को बनाये रखने का पूरा प्रयास किया लेकिन सफल नहीं हुआ। उसने सेना को नकद वेतन के स्थान पर अक्ता के रूप में वेतन प्रदान करने की प्रथा और अब सैनिक को नकद वेतन के स्थान पर भूमि या गॉवों के लगान के रूप में वेतन पाने लगे और वे 'वजहदार' कहलाने लगे।[37] अफीफ के अनसार इस तरह से सारे नगरों, प्रदेशो, गॉवों को सैनिकों के बीच वेतन के रुप में बॉट दिया गया। धीरे–धीरे इन स्थानों पर सैनिकों का आनुवांशिक अधिकार हो गया। स्थिति यह थी कि बूढे असहाय सैनिक अपने स्थान पर अपने दासों, नौकरों तथा अपने सम्बन्धियों को दीवाने–अर्ज के पास भेजने लगे। अब सैनिक पद भी आनुवांशिक हो गया। किसी भी सैनिक की मृत्यू के बाद उसकी अक्ता उसके पुत्र को दे दी जाती थी। यदि पुत्र न हाने पर मृतक के दामाद को, दामाद न होने पर उसके दास को और यदि दास भी न हो तो मृतक के किसी भी सम्बन्धी को उक्त अक्ता प्रदान की जाती थी।[38] यदि इसमें से कोई न मिले तो राज्य इस इक्ता को स्वयं जब्त करने के स्थान पर मृतक की औरतों को दे देता था। परन्तु राज्य की तरफ से पुनः इक्ता वापस नहीं ली जाती थी। प्रायः अक्ता प्राप्त ये सैनिक अपनी आमदनी इतिलाक(Itilaq) को नगर के साहूकारों के हाथों बेच देते थे। फिरोज तुगतक के समय सैन्य व्यवस्था सम्बन्धी नियम तोड़े गये जिसका परिणाम सैन्य व्यवस्था में भ्रष्टाचार अपने चरमोत्कर्ष पर पहुच गया।

सन्दर्भ

1. बरनी, जियाउद्दीन–हिन्दी अनुबाद–आदि तुर्क कालीन भारत, एस0 ए0ए0 रिजवी, नई दिल्ली–1956, पृ0 229 (बुगरा खॉ द्वारा कैकुवाद को दिया परामर्श)
2. हबीबुल्लाह, ए0बी0एम0–भारत में मुस्लिम राज्य की बुनियाद, इलाहाबाद 1992 पृ0 170
3. रैवर्टी, मेजर एच0जी0–तबकात–ए–नासिरी द्वारा मिनहाज –उस–सिराज का अग्रजी अनुवाद,कलकत्ता,1995, पृ0634–635
4. कुरैशी, आई0एस0–दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि सल्तनत आफ देलही,1971,पृ0137–138
5. हबीबुल्लाह, ए0बी0एम0–भारत में मुस्लिम राज्य की बुनियाद, इलाहाबाद 1992 पृ0 171
6. वहीं–पृ0–171
7. वहीं–पृ0–171
8. वहीं–पृ0–171
9. वहीं–पृ0–172
10. वहीं–पृ0–172
11. लाल, के0एस0–खलजी वंश का इतिहास, नई दिल्ली,1993, पृ0152
12. कुरैशी, आई0एस0–दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि सल्तनत आफ देलही,1971,पृ0 154
13. वर्मा, एच0 सी0, सम्पादक–मध्यकालीन भारत ,भाग –एक,नई दिल्ली 1999, (लेख–नीना सक्सेना) पृ0 365
14. बरनी,–तारीखे–फिरोजशाही,उद्धृत पाद टिप्पणी, निगम एस0 बी0पी0 –नोबिलिटी अण्डर दि सुल्तान आफ देलही, दिल्ली 1968, पृ0 159
15. उमरी, शिहाबुद्दीन अल–मसालिक उल अबसार, अनुबाद आटोस्पाई ओर अन्य,पृ0 28–29
16. वहीं–पृ0 29, लाल के0एस0–थ्योरी एण्ड प्रेक्टिस आफ मुस्लिम स्टेट इन इण्डिया, पृ0 173
17. अशरफ के0एम0– हिन्दुस्तान के निवासियों का जीवन और उनकी परिस्थितियॉ,नई दिल्ली 2006, पृ0 92
18. लाल, के0एस0–खलजी वंश का इतिहास, नई दिल्ली,1993, पृ0150
19. कुरैशी, आई0एस0–दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि सल्तनत आफ देलही,1971,पृ0 140–141

Copyright @ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-7 No. 9 July 2020

20. वहीं,–पृ0 141
21. वहीं,–पृ0 142
22. वहीं,–पृ0 142
23. वहीं,–पृ0 142
24. डे0 यू0एन0– दि गवर्नमेण्ट आफ दि सल्तनत, नई दिल्ली,1993 पृ0 104
25. कुरैशी, आई0एस0–दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि सल्तनत आफ देलही,1971,पृ0 143
26. वहीं– पृ0 144
27. हबीबुल्लाह, ए0बी0एम0–भारत में मुस्लिम राज्य की बुनियाद, इलाहाबाद,1992 पृ0 172
28. कुरैशी, आई0एस0–दि एडमिनिस्ट्रेशन आफ दि सल्तनत आफ देलही,1971,पृ0 144
29. डे0 यू0एन0– दि गवर्नमेण्ट आफ दि सल्तनत, नई दिल्ली,1993 पृ0 104
30. वहीं,–पृ0 104
31. वहीं,–पृ0 104
32. वहीं –पृ0 104
33. लाल, के0एस0–खलजी वंश का इतिहास, नई दिल्ली,1993, पृ0150
34. वहीं –पृ0 150
35. डे0 यू0एन0– दि गवर्नमेण्ट आफ दि सल्तनत, नई दिल्ली,1993 पृ0 98
36. वही–पृ0 98
37. वहीं–पृ0 103
38. वहीं–पृ0 104

Copyright @ 2020 Authors